प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पंतनगर, जिला– ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

गाजर घास जागरूकता एवं उन्मूलन सप्ताह कार्यक्रम प्रारम्भ

पंतनगर। 16 अगस्त 2023। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्त पोषित एवं खरपतवार विज्ञान निदेशालय, जबलपुर (मध्य प्रदेश) के तत्वाधान में खरपतवार नियंत्रण परियोजना के अर्न्तगत सस्य विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय द्वारा गाजर घास जागरुकता सप्ताह का शुभारम्भ पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन केन्द्र (एलपीएम) में किया गया जिसकी अध्यक्षता कुलपति डा. एम.एस. चौहान द्वारा की गई। सभा में निदेशक शोध, डा. ए.एस. नैन, अधिष्ठाता कृषि महाविद्यालय, डा. एस.के. कश्यप, विभागाध्यक्ष, सस्य विज्ञान विभाग, डा. एम.एस. पाल, अधिष्ठाता स्नातकोत्तर, डा. के.पी. रावेरकर, अधिष्ठाता पशुचिकित्सा विज्ञान महाविद्यालय डा. एस. पी. सिंह अधिष्ठाता छात्र कल्याण विभाग, डा. ब्रजेश सिंह, निदेशक संचार एवं प्रसार डा. जे.पी. जायसवाल एवं वैज्ञानिकगण, छात्रों के साथ–साथ वरिष्ठ एवं कनिष्ठ शोध अध्येयता एवं प्रक्षेत्र सहायक आदि उपस्थित थे।

सभा के अतिथि कुलपति डा. एम.एस. चौहान ने गाजरघास के बारे में बताते हुए कहा कि इसके परागकण नाक के माध्यम से शरीर में प्रवेश कर जाते है जिससे मनुष्य में अनुवांशिक अस्थिरता उत्पन्ना हो टेस्टोस्टोरोन का स्तर बढ़ा देता है जिससे कि मनुष्यों में यौवनास्था जल्दी आ जाती है। अतः इसके समाधान हेतु हम सभी लोगों को मिलकर प्रयास करने की आवश्यकता है। यदि यह घास हमारे जीन में परिवर्तन उत्पन्न करेगा तो भविष्य में इसके परिणाम बहुत घातक होगें। गाजरघास के जैविक नियंत्रण हेतु उपयोग में लाए जाने वाले मैक्सिकन बीटल की वृद्धि एवं संरक्षण के लिए डा. चौहान ने इनके अंडों को संरक्षित रखने एवं समय पर उपयोग करने के लिए जोर दिया। अंत में कुलपति ने इस जागरूकता अभियान में विश्वविद्यालय के पूर्ण सहयोग का आह्वान किया और कहा कि विश्वविद्यालय में भविष्य में होने वाले सभी कार्यक्रम में इस विषय पर अवश्य प्रकाश डाला जाए। सभी गणमान्य व्यक्तियों द्वारा गाजरघास के नियंत्रण हेतु मैक्सिकन बीटल कीटों का फैलाव किया गया। सभा का समापन करते हुए डा. एस.पी. सिंह, परियोजना अधिकारी खरपतवार नियंत्रण परियोजना ने उपस्थित समुदाय के प्रति आभार व्यक्त करते हुए सभी से गाजर घास के उन्मूलन में सहयोग करने की अपील की।

इस अवसर पर डा. एस.के. कश्यप ने बताया कि गाजरघास पूरे देश में एक व्यापक समस्या है और सस्य विज्ञान विभाग इस जागरूकता कार्यक्रम को कई वर्षों से चला रहा है जिससे कि इस परिसर में काफी हद तक नियंत्रण पाया जा चुका है। इस समस्या का समूल नाश सम्भव तभी है जबकि हम गाजरघास को बीज बनने से पहले नष्ट कर दें। डा. ए.एस. नैन ने बताया कि इस घास का आगमन भारत में 1955 में हुआ और यह एक राष्ट्रीय समस्या है। देश के लगभग 35 मिलयन हैक्टेयर क्षेत्रफल में गाजरघास फैली हुई है जिससे मनुष्यों एवं जानवरों में विभिन्न प्रकार के रोग हो जाते हैं। इसके सम्पर्क में आने से खाज–खुजली, गर्दन, चेहरे तथा बाहों की चमड़ी सख्त होकर फट जाती है जिस कारण घाव बन जाते है जिसका निदान करना असम्भव हो जाता है।

सस्य विज्ञान विभागाध्यक्ष डा. एम.एस. पाल द्वारा गाजरघास पर प्रकाश डालते हुए बताया कि गाजरघास (*पार्थेनियम हिस्ट्रोफोरस*) जिसको अलग अलग स्थनों पर कांग्रेस घास चटक चॉदनी, गंधी बूटी आदि नामों से जाना जाता है। यह बहुत ही हानिकारक एवं विषैला पौधा है जिसके प्रभाव से मनुष्यों में डरमेटाईटिस, एलर्जी, चर्मरोग, हे फीवर एवं अस्थमा (श्वास) आदि बीमारियां एवं पशुओं द्वारा खाने से दूध में कमी तथा विषाक्तता उत्पन्न हो गयी है। यह पौधा एक वर्ष में तीन बार अपना जीवन चक्र पूरा कर लेता है तथा इसके एक पौधे से 5000–25000 तक बीज उत्पन्न होता है। इसके द्वारा पर्यावरण भी प्रदूषित होता है। डा. एस.पी.सिंह, परियोजना अधिकारी ने सभा में उपस्थित सभी गणमान्य लोगों का अभिवादन करते हुए गाजरघास से होने वाली हानियों एवं इसके नियंत्रण के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि गाजर घास पहले अकृषित क्षेत्रों में ही फैला हुआ था परन्तु अब कृषित क्षेत्रों में अपना विस्तार कर लिया है जिससे फसलों को 35–40 प्रतिशत तक ही हानि हो रही है।

कार्यक्रम में उपस्थितजनों को गाजर घास की जानकारी देते वैज्ञानिक।

निदेशक संचार